

पद २५०

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

अजहुं न क्यों नहीं आयो कृपाधो । कौन दास तुमको
भिरमायो ॥ध्रु.॥ गज सुमरे तब धायो प्रभुजी । खगपति बेगिन
पायो ॥१॥ द्रुपदसुता की राखी लाज प्रभु । लाखन चीर बढायो
॥२॥ खंब फोड़ पहेलाद के कारन । नरसिंग रूप धर आयो ॥३॥
मानिक कहे तोहे दरसन के कारन । हुलक हुलक जस गायो ॥४॥